Downloaded from www.studiestoday.com

Subject :- Hindi

Class – IX

धूल

क. निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए :-

प्र.1 धूल के बिना किसी शिशु की कल्पना क्यों नहीं की जा सकती?

उ. माँ और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है। मां की गोद से उतरकर बच्चा मातृभूमि पर कदम रखता है। घूटनों के बल चलना सीखता है फिर धूल से सनकर विविध क्रीड़ाएँ करता है। शिशु का बचपन मातृभूमि की गोद मे धूल से सनकर निखर उठता है। इसलिए धूल के बिना किसी शिशु की कल्पना नहीं की जा सकती। यह धूल ही है जो शिशु के मुँह पर पड़कर उसकी स्वाभाविक सुंदरता को उभारती है। अभिजात वर्ग ने प्रसाधन सामग्री में बड़े-बड़े आविष्कार किए परंतु शिशु के मुँह पर छाई वास्तविक गोधूलि की तुलना में वह सामग्री कोई मूल्य नहीं रखती।

प्र.2 हमारी सभ्यता धूल से क्यों बचना चाहती है?

उ. हमारी सभ्यता धूल से इसलिए बचना चाहती है क्योंकि वह आसमान में अपना घर बनाना चाहती है। हवाई किले बनाती है। वास्तविकता सू दूर रहती है परंतु धूल के महत्व को नहीं समझती। यह सभ्यता अपने बच्चों को धूल में नहीं खेलने देना चाहती। धूल से उसकी बनावटी सुंदरता सामने आ जाएगी। उसके नकली सलमें-सितारें धुँधले पड़ जायेंगे। धूल के प्रति उसमें हीनभावना है। इस प्रकार हमारी सभ्यता आकाश की बुलंदियों को छूना चाहती है। वह हीरों का प्रेमी है, धूल भरे हीरों का नहीं। धूल की कीमत को वह नहीं पहचानती।

प्र.3 अखाड़े की मिट्टी की क्या विशेषता होती है?

उ. अखाड़े की मिट्टी शरीर को पहचानती है। यह साधारण मिट्टी नहीं है। इसे तेल और मट्ठे से सिझाया जाता है और देवताओं पर चढ़ाया जाता है। ऐसी मिट्टी में सनना परम सुख है जहाँ इसके स्पर्श से मांसपेशियाँ फूल उठती हैं। शरीर मजबूत और व्यक्तित्व प्रभावशाली हो जाता है। वहीं इसमें चारों खाने चित्त होने पर विश्व-विजेता होने के सुख का अहसास होता है। लेखक की दृष्टि से इसके स्पर्श से वंचित होने से बढ़कर दूसरा कोई दुर्भाग्य नहीं है।

प्र.4 श्रद्धा, भक्ति, स्नेह, की व्यंजना के लिए धूल सर्वोत्तम साधन किस प्रकार है?

उ. श्रद्धा विश्वास का प्रतीक है। भक्ति हृदय की भावनाओं का बोध कराती है। प्यार का बंधन स्नेह की भावनाओं को जोड़ता है। लोग कहते हैं कि धूल के समान तुच्छ कोई नहीं है, जबकि सभी धूल को माथे से लगाकर उसके प्रति अपनी भक्ति व्यक्त करते हैं। वीर योद्धा धूल को आँखों से लगाकर उसके प्रति अपनी श्रद्धा जताते है। हमारा शरीर भी मिट्टी से बना है। इस प्रकार धूल अपने देश के प्रति श्रद्धा, भक्ति और स्नेह व्यक्त करने का सर्वोत्तम साधन है।

प्र.5 इस पाठ में लेखक ने नगरीय सभ्यता पर क्या व्यंग्य किया है?

उ. इस पाठ में लेखक ने बताया है कि जो लोग गाँव से जुड़े हुए हैं वे यह कल्पना ही नहीं कर सकते कि धूल के बिना भी कोई शिशु हो सकता है। वे धूल से सने हुए बच्चे को 'धूलि भरे हीरे' कहते है। आधुनिक नगरीय सभ्यता बच्चों को धूल में रखने से मना करती है। नगर मे लोग कृत्रिम वातावरण में जीने पर विवश होते हैं। नगर की सभ्यता को बनावटी, नकली और चकाचौंध भरी कहा गया है। यहां लोगों को कांच के हीरे ही प्यारे लगते है। नगरीय सभ्यता में गोधूलि का महत्व नहीं होता जबकि ग्रामीण परिवेश का यह अलंकार है। नगरों में तो धूल-धक्कड़ होती है गोधूलि नहीं।

ख. निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर (50-60 शब्दो में) लिखिए -

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

प्र.1 लेखक 'बालकृष्ण' के मुंह पर छाई गोधूलि को क्यों श्रेष्ठ मानता है?

उ. लखेक बालकृष्ण के मुंह पर छाई गोधूलि को इसलिए श्रेष्ठ मानता है क्योंकि यह धूल उनके सौन्दर्य को कई गुना बढ़ा देती है। यहां कृत्रिम प्रसाधन सामग्री की निरर्थकता को प्रकट किया गया है। फूलों के ऊपर रेणु उनकी शोभा को बढ़ाती है। वहीं शिशु के मुँह पर उसकी स्वाभाविक पवित्रता को निखार देती है। सौन्दर्य प्रसाधन उसे इतनी सुंदरता प्रदान नहीं करते जितनी धूल करती है। इसलिए लेखक धूल के बिना किसी शिशु की कल्पना कर ही नहीं सकता।

प्र.2 लेखक ने धूल और मिट्टी में क्या अंतर बताया है?

उ. लेखक ने धूल और मिट्टी में विशेष अंतर नहीं माना है। उसके अनुसार धूल और मिट्टी में उतना ही अंतर है जितना कि शब्द और रस में, देह और जान में अथवा चांद और चांदनी में होता है। जिस प्रकार ये अलग-अलग होते हुए भी एक हैं। उसी प्रकार धूल और मिट्टी अलग नाम होकर भी एक ही है। मिट्टी की आभा का नाम धूल है और मिट्टी के रंग-रूप की पहचान उसकी धूल से होती है। जीवन के सभी अनिवार्य सार तत्व मिट्टी से ही मिलते है। जिन फूलों को हम अपनी प्रिय वस्तुओं का उपमान बनाते है। वे सब मिट्टी का ही उपज है। रूप, रस, गंध, स्पर्श इन्हें मिट्टी की देन माना जा सकता है। मिट्टी में जब चमक उत्पन्न होती है तो वह धूल का पवित्र रूप ले लेती है। यही धूल हमारी संस्कृति की पहचान है।

प्र.3 ग्रामीण परिवेश में प्रकृति धूल के कौन-कौन से सुंदर चित्र प्रस्तुत करती है?

उ. ग्रामीण परिवेश में प्रकृति धूल के अनगिनत सुंदर चित्र प्रस्तुत करती है -

- ग्रामीण परिवेश में पले बढ़े बच्चे धूल से सने दिखाई देते है। यह धूल उनके मुख पर उनकी सहज पवित्रता को निखार देती है।
- गांव के अखाड़ों में भी धूल का प्रभाव दिखाई देता है यहां की मिट्टी तेल और मट्ठे से सिझाई हुई होती है जिसे देवता पर भी चढ़ाया जाता है।
- ग्रामीण परिवेश में शाम के समय जंगल से लौटते हुए गायों के खुरों से उठती धूल गोधूलि की पवित्रता को प्रमाणित करती है।
- सूर्यास्त के उपरांत बैलगाड़ी के निकल जाने के बाद उसके पीछे उड़ने वाली धूल रुई के बादल के समान दिखाई देती है या ऐरावत हाथी के नक्षत्र-पथ की भांति जहां की तहां स्थिर रह जाती है।
- चांदनी रात में मेले जाने वाली गाड़ियों के पीछे जो कवि की कल्पना उड़ती चलती है वह शिशु के मुंह पर, धूल की पंखुड़ियों के समान सौंदर्य बनकर छा जाती है।

प्र.4 'हीरा वहीं घन चोट न टूटे' - का संदर्भ पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उ. इस पंक्ति में लेखक ने हीरे और कांच में तुलना करते हुए कहा है कि सच्चा हीरा वहीं होता है जो हथौड़े की चोट पड़ने पर भी नहीं टूटता। कांच और हीरे में यही अंतर है। धूल भरे हीरे में ऊपरी धूल को न देखकर भीतरी चमक को निहारना चाहिए जो अटूट होती है। यह अमरता का दृढ़ प्रकाश प्रस्तुत करती है। कांच की चमक को देखकर मोहित हो जाना मूर्खता है। हीरे की परख जौहरी ही कर सकता है। हीरा अटूटता का स्पष्ट प्रमाण है तो कांच क्षणिकता का। हीरा एक-न-एक दिन अपनी अमरता का बोध कराकर कांच की नश्वरता को प्रमाणित करता है। लेखक के अनुसार धूल में लिपटा किसान आज भी अभिजात वर्ग की उपेक्ष का पात्र है। किसान उसकी उपेक्षा सहनकर मिट्टी से प्यार करता है और अपने परिश्रम से अन्न पैदा करता है। यह उसके परिश्रमी होने का प्रमाण है। वह ऐसा हीरा है जो धूल भरा है। हीरा अपनी कठोरता के लिए जाना जाता है जो हथौड़े की चोट से भी नही टूटता। इसी प्रकार से भारतीय किसान भी कठोर परिश्रम से नहीं घबराता है इसलिए वह अटूट है।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

प्र.5 धूल, धूलि, धूली, धूरि और गोधूलि की व्यंजनाओं को स्पष्ट कीजिए।

उ. धूल, धूलि, धूली, धूरि और गोधूलि की व्यंजनाएँ अलग है। धूल जीवन का यथार्थवादी गद्य है तो धूलि उसकी कविता है। अर्थात् हमारा शरीर जिस धूल और मिट्टी से बना है। वहीं धूल उसकी वास्तविकता प्रकट करती है और इसी धूल शब्द को कवियों ने धूलि के रूप में अभिव्यंजित किया है। धूली छायावादी दर्शन है। इसकी वास्तविकता छायावादी कविता के समान संदिग्ध है। धूरि लोक संस्कृति का नवीन जागरण है अर्थात् भारतीय संस्कृति में कवियों ने धूरि शब्द का प्रयोग करके अपनी प्राचीन सभ्यता को प्रकट करना चाहा है। इसी प्रकार गौ-गोदालों के पद संचालन से उड़ने वाली मिट्टी को गोधूलि कहा गया है। इन सबका रंग चाहे एक ही हो किंतु रूप में भिन्नता है, मिट्टी चाहे काली, पीली, लाल तरह'तरह की होती है लेकिन धूल कहते है ही शरत् के धुले-उजले बादलों का स्मरण हो जाता है।

प्र.6 'धूल' पाठ का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

उ. 'धूल' पाठ के में लेखक ने धूल की महिमा, माहात्म्य व उपलब्धता व उपयोगिता का वर्णन किया है। इस पाठ के माध्यम से लेखक ने मजदूर किसानों के महत्व को स्पष्ट किया है। उनका मानना है क धूल से सना व्यक्ति घृणा अथवा उपेक्षा का पात्र नहीं होता बल्कि धूल तो परिश्रमी व्यक्ति का परिधान है। धूल से सना शिशु 'धूलि भरा हीरा' कहलाता है। आधुनिक सभ्यता में पले लोग धूल से घृणा करते है। वे यह नहीं जानते कि धूल अथवा मिट्टी ही जीवन का सार है। मिट्टी में ही सब पदार्थ उत्पन्न होते हैं। इसलिए सती मिट्टी का सिर से, सिपाही आंखो से तथा आम नागरिक स्नेह से स्पर्श करता है। अतः लेखक ने देशप्रेम और संस्कृति की प्रतीक धूल को विभिन्न सूक्तियों, लोकोक्तियों तथा उदाहरणों के माध्यम से प्रतिपादित किया है।

प्र.7 कविता को विडंबना मानते हुए लेखक ने क्या कहा है?

उ. लेखक का विचार है कि गोधूलि पर अनेक कवियों ने कविता लिखी है परंतु वे उस धूलि को सजीवता से चित्रित नही कर पाए हैं जो गांवो में संध्या के समय गायें चराकर लौटते समय ग्वालों और गायों के पैर से उठकर सारे वातावरण में फैल जाती है। अधिकांश कवि शहर के रहने वाले हैं और शहरों में धूल-धक्कड़ तो होता है, परंतु गांव की गोधूलि नहीं होती इसलिए वे गांव की गोधूलि का सजीव वर्णन अपनी कविताओ में नही कर पाए। हिन्दी कविता की सबसे सुंदर पंक्ति है 'जिसके कारण धूल भरे हीरे कहलाएगा' परंतु फिर भी विडंवना यह है कि कवियों की लेखनी पर नगरीय सभ्यता विस्तार के कारण विराम-चिह्न लग गया है।

Downloaded from www.studiestoday.com